



पुस्तकः ४१ भुः
अंकः ६ भा. :

आत्म सं. ४८
वीर सं. २४७०

विक्रम सं. २००० : चैत्रः
५. स. १९४४ : अप्रैलः

प्रभुज्ञ महावीर तुं मंगलकार.

(राग-लीभपवास.)

प्रभुज्ञ महावीर तुं मंगलकार.

जगनायड जगयुरु जगवंहन, जगल्लवन जयकार. प्रभुज्ञ०
पूर्ण काम पुरुषेऽत्मस्वामी, सत्य हया वरनार. प्रभुज्ञ०
नाथ निरंजन लवी मनरंजन, अपलय लंजनहार. प्रभुज्ञ०
अहिंसाधारी महा उपकारी, मुक्तिसुण हातार. प्रभुज्ञ०
यशोलद्व वीतराणी वीरने, वंहन वारंवार. प्रभुज्ञ०

स्थिताः भुनि यशोलद्विज्यज्ञ-वलसाठ.

—ॐ—



શ્રી મહાવીર જનમોત્સવ.

(ભીમપલાસ-ભારત કા ઉકા-એ રાગ)

સિદ્ધાર્થ ઉરે નવ હર્ષ સીમા, વિશલા હરખાયે રગરગમાં;
શુલ લાખ અહિસા પ્રસરે ત્યાં, મહાવીર પ્રલુ જનમ્યા જગમાં. ૧૬.

અવિજનના ઉર ઉધાન મહો, મધુરી સુખા વસંત ઘીલી;
શુલ ભક્તિ સુવૃત્તિ વસી રસીલી, મહાવીર પ્રલુ જનમ્યા જગમાં. ૧

મૈત્રી જગી સુરહાનવમાં, હુર્ગણુ પરિણુમતા સહિણુમાં;
કરણું અગટી હિંસક ઉરમાં, મહાવીર પ્રલુ જનમ્યા જગમાં. ૨

ધરણી નંદનવં સમ લાસે, મહેકે પૃથ્વી મધુરી વાસે;
સુરખાળાચો રમતી રાસે, મહાવીર પ્રલુ જનમ્યા જગમાં. ૩

સધળાં ચૈતન્ય સ્વરૂપ લાવે, ચૈતનની જ્યોતિ પ્રગટાવે;
પ્રલુની ભૂર્તિ ઉર પધરાવે, મહાવીર પ્રલુ જનમ્યા જગમાં. ૪

વર્ષા વર્ષી ધનધાન્ય તણી, ભમતા હુર્વત્તિ સર્વ હણી;
સમતા વૃત્તિ શુલ શ્રેષ્ઠ ગણી, મહાવીર પ્રલુ જનમ્યા જગમાં. ૫

ભૂમિ શુદ્ધ ધની શીતલ વાયુ, જૂલતાં વૃક્ષો જન હીર્ધાયુ;
આનંદ લયું જગ સુખ છાયું, મહાવીર પ્રલુ જનમ્યા જગમાં. ૬

પ્રલુ અજિત ઝુદ્ધિના સ્વામી, આનંદ સ્વરૂપ અંતર્યામી;
હેમેન્દ્ર પ્રમોદ ધરે પામી, મહાવીર પ્રલુ જનમ્યા જગમાં. ૭

રચયિતા: સુનિ શ્રી હેમેન્દ્રસાગરજ સુ. હાવડા (વિજપુર)





नि रा शा मां भु क्ति.

लेखकः आ. श्री विजयकृतूरसूरिण महाराज.

मानव ल्लवननो लोकता अने मानव-देहमां वसनारी आत्मा सुख, शांति, आनंद अने निर्दोषतानो ईश्वरुकृ हमेशां बन्धी रहे छे अने तेने भेणवका निरंतर प्रयत्न करे छे. सुख एट्टेआरोग्यता-अशाता वेदनीयनो अलाव. शांति एट्टेगित्तनी निर्विकल्पता-कलेशनो अलाव-मेहनीयनो उपशमलाव. आनंद एट्टेनिर्भूण ज्ञान-वस्तुतु यथार्थ ज्ञानवृत्त-दर्शन भेष्ठनीयगर्भित ज्ञानवर्षीयनो क्षयोपशम अने निर्दोषता एट्टेअपुनर्जन्मता-अपुनरावृत्ति पद्धनी प्राप्ति-आसुख्य कुर्मनो अपुनर्जन्मधक्षणे सर्वथा अलाव. विचार करतां स्पष्ट ज्ञानाई आवे छे के कुर्मधीनपर्यु आत्माने भाटे अत्यंत अनिष्ट करवावाणु छे. कुर्म अदृष्ट-पर्यु आत्माना सुख, शांति अने आनंदादि इष्ट पदार्थी पर प्रहार कर्त्ते जाय छे; जेथी करी आत्मा सुखादि वस्तुओथी नभणो रहे छे.

कुर्मनी आधीनता-कुर्मनी गुतामी अज्ञानी आत्माने अत्यंत प्रिय लागे छे; कारणु के अज्ञानी आत्माने अनादि काणना अरुयासने लेइने कुर्मजन्य सुखनी ज अलिङ्गी होय छे अने तेथी करीने ज जड जगतनी क्षुणिकृ सौंदर्यता लेइने तेने प्राप्त करवा पुन्यकुर्मनो उपासक अने छे; पणु कुर्म भात्रनो संहारक अनतो नथी अने परिणामे कुर्मनी परतंत्रतामांथी सुकृत थवानो अहले वधुने वधु अद्ध थतो जाय छे; जेथी करीने निरंतर कुर्मनो दास अनतो रहे छे.

मेहनां भेजनं फ्री वणी हु; घना दरियामां डेहेलुं जगत सुखशांति भाटे क्षंक्षां भारी रह्यु छे. हुःअगर्भित हुःभ पूर्ण सुखमां संतोष भानी कुभिती भानवल्लव ओए रह्यु छे; पणु अशातावेदनीयनो अंत लाव्या सिवाय सुख क्यांथी ? अने ते अशातानो अंत ल्लव भात्रने शाता पहेंचाड्या सिवाय क्यांथी ? धन, आग, अंगला, कुटुंभ, परिवार, संपत्ति आहि शाता सिवाय अधु ये नकामुं. शाता तथा अशाताना अंत सिवाय, अर्थात् वेदनीय कुर्मना क्षय सिवाय साची अने शाश्वती शाता क्यांथी ?

द्रव्य आरोग्यता तो अनंती वधत मणी, शातावेदनीय तो धणी वधत लेणवी; पणु भाव आरोग्यता वेदनीय कुर्मना अलावड्य आत्माचे आज सुधीमां प्राप्त करी नथी अने तेथी करीने ज आत्माना सुखनी दरिक्ता टणी नथी. घटकानी आशा राख्या सिवाय ल्लवने शाता आपनार, भाव आरोग्यता भेजवे शुके छे; अने आशावाही द्रव्य आरोग्यता भेजवे छे. जगत आशावाही छे, एट्टेज अंते निराशा अने छे. आशावाहीनी निराशा आत्म-विकास करवानी होय छे. निराशा ते ज वैराग्य भाव छे. आ निराशा समज ज्ञानपूर्वक अने अज्ञानपूर्वक होय छे. ज्ञानपूर्वक निराशा वस्तुना यथार्थ ज्ञानथी थाय छे अने अज्ञानपूर्वक निराशा ईच्छित पैद्यगलिक वस्तु न भजवाथी थाय छे. अज्ञान जनित निराशा अने ज्ञानजन्य निराशा अने वैराग्य भावना छे.

अज्ञानजन्य निराशा हुःभगवित वैराग्य अने ज्ञानजन्य निराशा ज्ञानवित वैराग्य कहेवाय छे. अन्ने प्रकारना वैराग्यना अंगे त्याग पण्हु हुःभगवित अने ज्ञानवित एम ऐ प्रकारना होय छे. हुःभगवित वैराग्यथी करवामां आवतो त्याग आशावित छेय छे. अने ते जडासङ्क लुवेमां परिवर्तन पामतो नथी; कारणु कै पौद्विक सुषेणी धन्द्या होवा छतां न मणवाथी निराश अनीने भावीमां मेणवाणी आशाथी करवामां आवे छे; जेथी करी पुन्य प्राप्त करीने पोतानी आशा सङ्कण करे छे. हुःभगवित वैराग्यजन्य त्याग धर्म अंगीकार करवावाणीने भोहनीय कर्मनुँ क्षयोपयम थर्ड बाय अने ज्ञान प्राप्त थाय तो ते हुःभगवित वैराग्य ज्ञानवित वैराग्य पण्हु थर्ड शके छे. अने ज्ञानवित वैराग्य-जन्य त्यागथी आत्म विकास पण्हु करी शके छे. क्षणिक, अनित्य, असार आहि वस्तुना यथार्थ ज्ञानथी थवावाणी निराशा, साच्चा ज्ञानवित वैराग्य छे. आ निराशा आशाजन्य निराशा न होवाथी आत्मविकासना अंगलूत छे. यथार्थ आत्मस्वद्वप्ने अंश छे. आ निराशा सर्व कर्मने संहार करी आत्माने पूर्ण स्वतंत्र बनावावाणी छे. अने ते निराशा-जन्य निराशा होवाथी आत्मस्वद्वप्न विरक्त-आवने ज कहेवामां आवे छे.

जगतनो आशावादांचेट्ले भोहनुं साम्राज्य. भोहनी सत्ता. परिवर्तन शील संसारनो केाध-पण्हु सद्य ज्यां सुधी आशानो आश्रित छे त्यां सुधी भोहना नियमनु लेश मात्र पण्हु उल्लंघन करी शकतो नथी. कारणु कै उल्लंघन करवाथी भोहनीयनी कठिनमां कठिन शिक्षानु पात्र बने छे. जे सद्य सणण अनी आशा सुकृत थाय छे अने भोहना नियमनु उल्लंघन करीने बंड उठावे छे तेने प्रथम तो भोहना

तरक्ष्य अनेक प्रकारनी यातनाओ लोगवी पडे छे; परंतु आशामुक्ता होवाथी परिणामे भोह उपर विजय मेणवी संपूर्ण आत्मशक्तिनो विकास करी शके छे, जेथी करी साची सुखशांति अने आनंदनो लोकता अरे छे. आशानो आश्रित डेअ पण्हु काणे भोह उपर विजय मेणवी शकतो नथी, कारणु कै जेनी आशा करवामां आवे छे ते वस्तु जडनो विकार छे अने आशा भोहनो विकार छे. अन्ने जड होवाथी अने जड वस्तुओनी प्राप्ति कर्म आधीन होवाथी आत्माने निरंतर जडनी सेवा करवी पडे छे. ज्यांसुधी आत्मा सेवक छे त्यां सुधी निर्भयताना अंगे कर्म उपर विजय मेणववो धर्षो ज कठिन छे; माटे ज भोहकर्म उपर विजय मेणवनार जड तथा जडना विकारा पासेथी सुख आहिनी आशाथी सर्वथा रहित थवुं नेझेवे.

जड संसारथी निराश रहेनार ज शांति मेणवी शके छे. चित्तनी शांति निर्विकल्पतानी उत्पादक निराशा ज छे. आशाअद्ध आत्माना चित्तमां जड संसारना पदार्थीमां धृष्ट अनिष्टी भावना होवाथी अनेक प्रकारना संकल्प-विकल्पद्रव्य तरंगेनुं उत्थान निरंतर थाया ज करे छे कै जेने असमाधि-अशांति कहेवामां आवे छे. ज्यां सुधी आशानुं वावाजेकुं शांत थाय नहि त्यांसुधी संकल्पविकल्पनी तरंगेमां स्थिरता आवी शकती नथी. अने ज्यां सुधी संकल्पनी तरंगेमां अस्थिरता छे त्यां सुधी शांति कै समाधि नथी-त्यांसुधी आनंद-स्वरूप आत्मा निर्दीष निर्विकार अनी शकतो नथी. निर्दीष अन्या सिवाय आत्माने पूर्ण स्वतंत्रता अणी शकती नथी. पूर्ण स्वतंत्र अन्या सिवाय अपुनरावृत्ति स्थान होई शकतुं नथी अने लवभ्रमण्ह टणी शकतुं नथी.

साधन धर्म नथी.

संसारवासी ज्ञावे उपर भोग्नीयना राग अने द्रेष अन्ने हुःभोचे एटली अधी सत्ता जगावी छे के नेने लोहने उपशमभाववाणा पछु आश्चर्य पामे छे. भने विचार करतां हजु समझतुं नथी के संसारवासीयो धर्मना नामे आपसमां द्रेष तथा वैरविरोधनो आहर शा माटे करता हुशे ? एक्थीले अणाखाभाषणा तथा अभिय केम लागता हुशे ? ज्ञावात्र एक ज धर्मवाणा छे. डोहनो पछु धर्म जुदो नथी. जुदा धर्मवाणुं तो जड छे. अने ते ज विधमी छे. तो पछी ज्ञावे धर्ममां शा माटे लेह पाडता हुशे ?

अणुज्ञ भाषुसो तो परमात्माना^१ भाषुसोने लहने जुदा जुदा धर्म स्थापन करे छे. अमुक वैष्णवधमी छे. अमुक शिवधमी छे. अमुक बिनधमी छे. परमात्माना नामोने लहने आत्मधर्ममां केवीरीते लेह पाड्या ते ज आश्चर्य जनक छे !

अरुं लेतां तो आत्मधर्ममां केआ पछु प्रकारनो लेह नथी. अनेक आकृति तथा प्रकृतिमां जग्याता ज्ञावात्र स्वदपे एक सरभा ज छे. अमे ते ढेहमां ज्ञावे केम न रहेता होय पछु शानदर्शन तथा प्रदेशमां जराय लेह नथी. आत्मधर्ममां अलेह दृष्टि थया सिवाय रागद्रेष ओछा थता नथी अने राग द्रेष ओछा थया सिवाय आत्मविकास थतो नथी. अधाय चोताने सम्यग्हृष्टि भाने, पछु वास्तविक स्वदपमां अलेह दृष्टि थया सिवाय सम्यकूत्प क्यांथी ? आत्मधर्ममां लेह भुद्धि अने जडधर्ममां अलेह भुद्धि ते कांध सम्यकूत्प कही शकाय ? अने ज्यां सम्यकूत्प नथी त्यां शान क्यांथी होय ? अने शान वगर विकास क्यांथी ?

साधनने धर्म माननाराज्ञा, साधनने दृष्टिमां

राजीने आत्मधर्ममां लेह पाडे छे. पछु साधन भात्र जड छे. ते साध्य चैतन्यना धर्ममां केवी रीते लेह पाडी शके ? नाम, स्थापना, पुस्तक, भाणा, देहडिया, लेख अध्याय जड ते ज्ञानदर्शनयाचित्र धर्ममां परिवर्तन केवी रीते करी शके ? अनाहि काणथी आत्माना प्रदेशोमां एतप्रोत थाईने रहेलुं कर्म-जड आत्मधर्ममां परिवर्तन करी शकयुं नथी, तो पछी कोइक वयत ज सभधमां आवनार जड आत्मधर्मने तेवी रीते इरवी शके ?

सामु कुपडांना ताताणा उपर रहेला मेलने झर करी शके, पछु तांताण्यांनो लाल, पीणा के काणा न अनावी शके. जड साधनो आत्मप्रदेश उपर रहेला कर्म-जडने अशेठी शके पछु आत्मप्रदेशोने ज्ञानदर्शननी तारतम्यता के वर्षा, गंध, रस, रपर्शवाणा न अनावी शके. अज्ञानताथी जड साधनोने वणी रही वैरविरोधनो आश्रित अनी आत्मधर्ममां लेह दृष्टि राखनार आत्मदोही होवाथी आत्मविकासनो अनधिकारी छे.

मनुष्य भात्र जाणे छे के भाषुस अज्ञ खाईने ज्ञावे छे. भाषुसने ज्ञवातुं साधन अन्नपाणी छे, छतां केआ मारी तथा पथरा नेवी वस्तुने घाराक तरीके वापरी ज्ञवातुं साधन अनावे तो ते सर्वथा अनुचित ज साधन कही शकाय. अने ज्ञवाने माटे केआ पछु भाषुस तेनो उपयोग न करे तो पछी आत्मविकासानां साधन सम्यग्ज्ञ शान, समता, शांति, समलाव, वैराज्य, त्याग आहि होवा छतां केआ राग, द्रेष, वैर, विरोध, अहेखाई, असहिष्णुता, वृष्णु, तिरस्कार, निर्दयता आहिने आत्मधर्मना विकासानां साधन अतावे तो डाह्या अने शानी पुरुषो केवी रीते मानी शके ? अने आत्मविकास माटे केवी रीते लान भूती

પરમાર્थસૂચક વાક્યસંગ્રહ

(ગતવર્ષના પૃષ્ઠ ૨૬૬ થી શરૂ.)

સંગ્રહક ને યોજક—મુનિ પુણ્યવિજ્ઞયળ (સંવિજ્ઞપાદ્ધિક)

જ્ઞાન વિના મોક્ષ નથી, વૈરાગ્ય વિના જ્ઞાન નથી, વિચાર વિના વૈરાગ્ય નથી, સ્થિરતા વિના વિચાર નથી. ૮૮

જ્યાં સુધી જીવને વૈરાગ્ય સફુરતો નથી ત્યાં સુધી તેને તત્ત્વજ્ઞાન પ્રાપ્ત થતું નથી. સિદ્ધાન્તભોધનું અવથુ, વાચન કે પઠન તે જીવ કરે પણ તેના અંતરમાં પ્રવેશ પાની શકતા નથી. ૮૯

પાત્રતા વિના જ્ઞાન પ્રાપ્ત થતું નથી—પરિ-

તન્મય અને ? વસ્તુ ભાત્રતું અસ્તિત્વ હ્યાતી-હોવાપણું ધર્મને અવલાંખીને રહેલું છે. સાકર મીઠી, કરિયાતું-કડવું, મીહું, ખાલ. આત્મજ્ઞાન-હર્ષિનવાળો, જરૂર-વર્ણ, ગંધ, રસાદ્વિવાળું ઈત્યાહિ વસ્તુઓના ધર્મતું ખર્દન-નાશ કરવા અનાહિ કાળથી અત્યાર સુધીમાં અઈ ગયેલી સમર્થ વ્યક્તિઓમાંથી કોઈ પણ સમર્થ થયું નથી, થણે પણ નહિ અને હ્યાતે પણ નથી કે જે ધર્મતું ખર્દન કરી શકે. સમજતું નથી કે અલ્યારે એકખીલ એકખીલના ધર્મતું ખર્દન કોઈ રીતે કરતા હશે? ધર્મતું ખર્દન કરવા જતાં આત્માના પોતાના ધર્મને ટાંકી હેવા ગાઠ કર્મના પડહાયો બનાવી સમ્બન્ધજ્ઞાનદર્શનાદિને ટાંકી રહ્યા છે.

સાધનોનું પણ ખર્દન થઈ શકતું નથી, કારણું કે સાધનો પણ પોતાના જ સ્વરૂપમાં રહેવાના. સાધન પણ વસ્તુ છે અને તે કથન ભાત્રથી નાશ થઈ શકતું નથી. સાધનોના ઉપયોગનું જે ખર્દન નહિ પણ; સાધનની સાંખ્ય

ધ્યાન આપતું નથી. તત્ત્વજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ માટે જીવને વૈરાગ્ય પાત્રતા આપે છે. આમ આ સંસારથી છૂટવા ઈચ્છા જીવાને-મુખ્યાને વૈરાગ્ય પરમ સાધન છે. ૬૦

જેના ચિત્તમાં લેશ માત્ર ત્યાગ, વૈરાગ્ય નથી તેને તત્ત્વજ્ઞાન ન થાય એમ સત્પુરુષો કહે છે તે ડેવળ સત્ય છે. આ કાળ એના પ્રત્યક્ષ્ય પૂરાવારૂપે છે. આ કાળને પરમ જ્ઞાની-એચે હુંમણ કહ્યો છે તે વાસ્તવિક છે. જે

પ્રત્યેની અતુકૂળતા-પ્રતિકૂળતાનો વિચાર કરતા હોય તો કંઈક અશે ઉચ્ચિત ગણ્યાય; પણ ત્યાં કદાથહ, ભિથ્યા જ્ઞાન, ભિથ્યા અકિમાન, રાગ દ્રેષ, વૈરવિરોધ, ઘૃણાદ્વિને અવકાશ જ નથી. જ્યાં આ વસ્તુઓ છે ત્યાં વિચાર નથી પણ વિવાદ જ છે અને જ્યાં વિવાદ છે ત્યાં વિકાસ જ નહિ પણ વિનાશ તિરોલાવ જ છે.

પોતાનું માનેલું (ભત) સાચું મનાવવા જુદ્ધિનો હુલપ્યોગ કરી કુચુક્તિઓનો આશ્રય દેઓ અથવા તો પ્રમાણિક પુરુષોના વચ્ચેનોને પોતાના વિચારોમાં જણ્ણાવો, કોઈ રીતે વસ્તુતું ખર્દન કરી શકવાના નથી તેમજ શેય કે વિકાસ પણ કરી શકવાના નથી. વિકાસના વિરોધી ભિથ્યા જ્ઞાનાદિનો આશ્રય લઈને અને અજ્ઞાનવશ થઈને ઓટી પ્રસિદ્ધ તથા મોટાઈ મેળવવા સાધનોના ખર્દન-મંડનમાં જિતરનાર અજ્ઞાની જીવાથી પોતાનો સ્વાર્થ સાધી શકે ખરા; પણ જ્ઞાની પુરુષોની દિલ્હિમાં તો તેઓ દયાના જ પાત્ર છે. *

काणमां लुवोने आत्महितना साधनो दुष्कर थई पड़ा होय, तत्पश्चान्-आत्मश्चाननी प्राप्ति परम हुर्भक्ष होय ते काण डेवण हुषभ-विषम कहेवा चोग्य छे. ६१

अंतरनी शक्तिएँ जगृत थाय अने मनुष्य पौत्रानु यथार्थ द्वदेव संपूर्ख रीते समलु शक्ते तेटवा माटे ज सर्व शास्त्रोनी रचना छे. ६२

आत्मानु अज्ञान-आत्मखान भूलवुं ते ज कृष्णुपक्ष छे, ते ज पुहगल परावर्तन छे, ते ज हुषमकाण छे, ते ज हुर्गतिनो भार्ग छे, अशान्तिनी उत्पत्ति ते ज छे, संसारनो प्रवाह पछु ते ज छे. रागदेव, वेर विरोध, विषय कृष्ण सर्व तेमांथी ज प्रगटे छे. ६३

न्यारे आ आत्मा, आत्मा अने आस्त्र-वोनो लेद जाण्ये छे ते ज वभते कृष्णायाहि आश्रवोथी निवृत्त थाय छे, कारणु के तेनाथी जे निवर्ततो न होय तेने आत्मा अने आश्रवोना पारमार्थिक (साचा) लेदशाननी सिद्धि ज थई नथी. ६४

लेदशान थया पधी लुवने अने पुहगलने कर्ता कर्मसाव छे एवी भुद्धि रहेती नथी; कारणु के न्यां सुधी लेदशान थतुं नथी त्यां सुधी अज्ञानथी कर्ता कर्मसावनी भुद्धि थाय छे. ६५

परमार्थ लुव-पुहगलनी प्रवृत्ति लिन्ह होवा छतां, ज्यां सुधी लेद ज्ञान न होय-थाय त्यां सुधी अहारथी तेमनी प्रवृत्ति एक जेवी होग्य छे. अज्ञानीने लुव-पुहगलवुं, जड-चेतननु लेदशान नहि होवाथी उपलक दृष्टिए लेवुं होवाय छे तेवुं ते भानी ले छे. ६६

जे द्रव्योनी किया लिन्ह ज छे. जडनी किया चेतन करतुं नथी, चेतननी किया जड करतुं नथी. जे पुरुष एक द्रव्यने जे किया

करतुं माने ते भिथ्यादृष्टि छे; कारणु के ए द्रव्यनी किया एक द्रव्य करे छे एम भानवुं ते श्री किननो भत नथी. ६७

आत्मा पौत्राना ज परिणामने करे छे, पुहगल परिणामने कही करतो नथी. आत्मानी अने पुहगलनी अन्नेनी किया एक आत्मा ज करे छे एम भाननारा अज्ञानी छे. जड-चेतननी एक किया होय तो सर्व द्रव्यो पलटी ज्वाथी सर्वोनो लोप थई जय ए भोटो होप उपजे. “हुं कर्ता पर लावनो ईम किम किम जाण्ये, तिम तिम अज्ञानी पडे निज कर्मने धाण्ये.” (७०) ६८

जे ज्ञानी-ध्यानी आत्मा छे ते निरीहपछ्ये बालुगरना बालु जेवी हुनियामां स्वाधिकारे कर्मी करे छे. एवी आत्मदशा पाक्या विना ज्यां त्यां परोपकार करवा प्रवृत्ति करवी ते वस्तुतः बांधन छे, तेथी आत्मानी वास्तविक शुद्धि थती नथी; माटे आत्मोन्नतिनो उपयोग प्रगटे एवी हशा प्रथम प्राप्त करवी ए ज सत्य कर्त्तव्य छे पश्चात् सेवाधर्मथी आत्मानी शुद्धि थया करे छे. ६९

आत्मश्चान प्राप्त करवाने इच्छता जिज्ञासुओये साधनादि कर्मी करवा, पछु तेना इण्ठाङ्गामां लेश मात्र आसक्ति राखवी नहि. भत-लभ के कियानुष्ठान आहि साधनो साधके चिन्त-शुद्धि माटे अहु जडना छे. जे कियानुष्ठानना इण्ठपे आत्मदर्शन थतुं होत तो कर्मीना इण्नो त्याग करवा माटे शास्त्रो कठापि उपहेश करत नहि १००.

उपायो केटवाक विधिरूपे तो केटवाक निषे-धरूपे एम ए प्रकारना होय छे; परंतु उद्देशने एक आब्जु मूळी दृष्टि डेवण उपायो संभंधी अधडा करवाथी कृद्याणु थई शक्तुं नथी. ज्यां जेयो त्यां प्रायः उपायोनी आतर ज भारामारी

चाली रही छे. उद्देश शुं, लक्ष शुं, साध्य शुं ते तरइ तो कोईनी नजर पथु पडती नथी. १०१

बाह्य साधने। मनने स्थिर करवाने भाटे अवलं अनूप हे ए वात पाठ्याथी भूली जवाय हे अने बाह्य साधनमां ज सर्वस्व भनाई जय हे. साधनोनो उद्देश ए ज के मनने स्थिर करी कुमे वृत्तिशून्य करवुं. १०२

विविध प्रकारना जे साधने शास्त्रमां दर्शी-ववामां आव्या हे ते सर्व एक भाग्र आत्म-ज्ञानी प्राप्तिने अर्थे ज हे; छतां अधिकारी लेहे साधनाच्यो पथु लिन लिन डोय हे. १०३

जैन धर्ममां जे आटला बधा पर्वे तथा उत्सवे कहा हे, तेनो हेतु भाग्र ए ज के धर्मनी भणान भणान भावनाच्यो लोडो सभल शके अने तेने कियामां भूझी शके. १०४

अनेक लोडो धर्मनी यथार्थ भावनाने नहि सभल शकवाथी तेने स्थूल रीते वणगी रहे हे. अने उत्सव-आमोह पूरो थयो एटले भावनाच्यो पथु भूली जय हे. एटला ज भाटे धर्मनुं बाह्य आवरण्य यथार्थ धर्मने तथा आत्मज्ञानने ढांडी हे हे, एम जे कुडेवाय हे ते अरुं पडे हे. १०५

जेच्यो पोतानो स्वार्थ-आत्मार्थ पथु पूरो साधी शकता नथी, तेच्यो पारकातुं कल्याणु श्री रीते करवाना हुता? १०६

श्रुतज्ञानी भावनाथी आत्मज्ञृति, विवेक-दृष्टिनो विकास अने झुळ्डि सूक्ष्म पदार्थी समज्वाने लायक अने हे. उत्सर्ज अपवाह समज्वाय हे, आयह ओछो थाय हे, वस्तुनी अधी दिशाच्यो जाणी शकाय हे, सापेक्ष वृत्तिच्य वस्तुतत्त्वनो विचार करवातुं अण आवे हे, स्पाइवाह दृष्टि ते ज कुडेवाय हे. तेने लर्धने हडेक वस्तु तथा दर्शनना लेहोनो अपेक्षाच्ये सफूक्षाव सभल शकाय हे. १०७

अनेकान्तवाह जनतामां शांत भावतुं वातावरणु उपज्वनार हे अने एथी ज ए समसावतुं भूत ए एटला भाटे संतो एने साम्यवाह पथु कडे हे. १०८

नयवाह भनुष्य-प्रज्ञानी दृष्टिने विशाळ अने हृदयने उदार भनावी भैत्रीभावनो रस्तो तेमने सरण करी आपे हे. आ रीते ज्ञवनना कलडो शभाववामां अने ज्ञवनविकासनो भार्ग सरण करी आपवामां नयवाह संस्कारी ज्ञवनतुं समर्थ अंग हे. १०९

क्षेयापशमथी सर्व भनुष्योनी लिन वृत्ति हेवाथी पोतातुं अन्यने सर्व पसंद न आवे अने सर्वनुं पोताने सर्वथा प्रकारे पसंद न आवे, आवी स्थिति सर्वत्र थाठाघणु अंशे ज्यां त्यां देखाय हे, तेमां ज्ञानी सापेक्ष झुळ्डि धारणु करीने सापेक्ष भावे व्यवहार अने निश्चयथी मध्यस्थ वृत्तिच्य आत्मकल्याणुमां प्रवर्ते हे. ११०

सत्यनी भातर सत्य हे; नहि के मने प्रिय हे अथवा भारुं हे भाटे सत्य हे. ए आमोध चाली जे ध्यानमां डोय तो दृष्टिराग, लोडेपृष्णु, लोडसंज्ञा, गाडरिच्या ग्रवाह, दर्शन-भोह ए बधा अपाटामां फूर थड्ह ज्ञध आत्मा पोताना सनातन-अनाहि निधन सत् भाषी सङ्केवणे. १११

ज्यां सुधी साची वात कुडेवानी तथा साची रीते वर्तवानी आपणुमां हिंमत आवी नथी, त्यां सुधी आपणो उत्कर्ष थवो. कहि पथु संलवित नथी. शुद्ध आशयथी स्व-पर झितनी थेअय तुलना करतां जे लागे ते कुडेवामां तथा करवामां ज पुरुषार्थ हे. ११२

विद्यक्षणु झुळ्डिशाणीच्यो भाषुसना वचनथी तेना शुणावणुन्योनो तोला निःसंशय करी शके हे. अमुक वचनो झुनिम हे अने अमुक तेना शुद्ध

પ્રસન્નતા



અતુ. અલ્યાસી.

પ્રસન્નતા કેને પ્રિય નથી ? એવો કોણું મનુષ્ય છે જેને પ્રસન્ન થવાનું નથી ગમતું ? એવો કોણું છે કે જેને પ્રસન્ન મનુષ્યની પાસે રહેલું નથી ગમતું ? આપણે સધળા ભાગને ચાહુંએ ધીંઘે શા માટે ? એટસા માટે જ કે ભાગક પ્રસન્નતામાં જ રહે છે જે આપણને હુર્બાલ છે. ખીલેલું કૂલ સૈને પ્રિય હોય છે અને કરમાયેલાં કૂલનો સૌ તિરસ્કાર કરે છે. રૈતીસૂરત મનુષ્યથી સૌ પાછા હુઠે છે. હુસતા માણુસનું સૌ કોઈ સ્વાગત કરે છે. તેનાથી કોઈને લુલ મુંઅતો નથી. જેનું મન પ્રસન્ન નથી તેની પાસે કશું નથી; અને જેનું મન પ્રસન્ન છે તેની પાસે સધું છે.

પ્રસન્નતા શક્તિની પરિચાયિકા છે. જે મનુષ્યની અંદર આધ્યાત્મિક શક્તિ હોય છે તે જ પ્રસન્ન રહી શકે છે. પ્રસન્નતા પોતે એ શક્તિની ઉત્પાદિકા પણ છે. મનુષ્ય જેટલો પ્રસન્ન રહે છે

અંતઃકરણના સત્ય છે. એ તારણી-એ પારખું તેઓ પોતાની બુદ્ધિવડે કરી શકે છે. ૧૧૩

કેટલીક વાર આપણે ખીંબાની દાળિષ્ણયતા રાખવી પડે છે અને તેથી કરીને આપણા મનને અણુગમતું કામ કરવાની ફરજ પડે છે. ધાર્મિક અને સંસારી ઉત્તમ કાર્યમાં પ્રેરણા હોય તો જ દાળિષ્ણયતા સાચવની અને તેનું જ નામ દાળિષ્ણયતા કહેવાય છે. ૧૧૪

યથાર્થ અધ્યાત્મારી અનવા માટે સૌ પહેલાં સંયમ સંધંધી કઠોર વ્રત-નિયમો પાળતાં શ્રીભવું જોઈએ, સ્ત્રીઓનાં નામ અને ગંધથી તો ફર રહેલું જ જોઈએ, એટલું જ નહિ પણ સ્ત્રીઓની સાથે સંસર્ગ રાખનારા ગૃહસ્થીના સહવાસથી પણ ત્યાગી-અધ્યાત્મારીએ ફર રહેલું જોઈએ. ૧૧૫

તેટલું આધ્યાત્મિક અણ તેનું વધે છે. એટલું જ નહિ પણ તે પોતાની શારીરિક શક્તિ પણ વધારે છે. મન પ્રસન્ન રહેવાથી શારીરની અમૃત પેદા કરનારી અંધિગ્રે પોતાનું કાર્ય સારી રીતે કરે છે અને શરીરમાં એ પદાર્થીનો પ્રવાહ ચાલુ રાખે છે કે જેનાથી શારીર અક્ષય અની રહે છે તેમજ વધે છે; પ્રસન્નચિત્ત મનુષ્ય ભાગે જ રોગી હશે.

પ્રસન્નતા માનસિક તપથી પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. ભાગની પ્રસન્નતા પ્રકૃતિ છે. પરંતુ તેની પ્રસન્નતાનો લંગ સહજ વારમાં થાય છે. પ્રૈઠ મનુષ્યની પ્રસન્નતા પુરુષાર્થથી ઉપલબ્ધ થાય છે. તે સાધનાવડે આવે છે. ખરી પ્રસન્નતા પ્રતિકૂળ પરિસ્થિતિઓથી નષ્ટ નથી થતી. પ્રૈઠ લોકોની પ્રસન્નતા જ વાસ્તવિક પ્રસન્નતા છે, કેમકે તે સ્થાયી રહે છે. એવી પ્રસન્નતા આપણે સર્વે મેળવી શકીએ ધીએ. તેને માટે આપણે આધ્યાત્મિક શક્તિ વધારવી પડશે.

જેમ જોગનની એક જ વસ્તુ એ લિન્ન લિન્ન પત્રોમાં મૂકુવાથી તેના સ્વાદમાં ફરક પડતો નથી, તેમ લાઘાના લેદો અનેક હોના છીતાં તેથી કરીને અર્થમાં કશો ફેર પડતો નથી. ૧૧૬

ભાષા ગમે તે હોય, પરંતુ જેમાં અધ્યાત્મ નિરૂપણું વિષય હોય અને અતુલભનો રસ લાદેવો હોય તો તેને સંસ્કૃત કરતા પણ ગંભીર સમજવી જોઈએ. ૧૧૭

હર્વિદ્ધધ, ધર્માળું મનુષ્ય અન્યના સત્ય લખાણું અસત-વિપરીત દિષ્ટથી જુએ છે, એનામાં દિષ્ટલેદનો ત્યાગ નહિ થયેલો હોઈ સત્ત વસ્તુ પ્રત્યે પ્રેમશૂન્યતા હોય છે. ૧૧૮

(ચાલુ)



आध्यात्मिक शक्तिनी वृद्धि ते शक्ति वधा-
रवाना उपाये लेवाथी थए शके छे. जेवी रीते
शरीरनी शक्ति स्वास्थ्य संभांधी नियमेतुं
पालन करवाथी वधी शके छे तेवी रीते मननी
शक्ति पथु आध्यात्मिक उपन संभांधी निय-
मेना पालनथी वधे छे. संसारना सर्व धर्म
अथाये आध्यात्मिक शक्ति वधारवाना उपाय
अताव्या छे. भारतवासीयों तो ए विषयतुं
ऐक विज्ञान ज अनांयुं छे.

आध्यात्मिक शक्तिना संचयना चार उपाय
चैगवसिष्ठकारे अताव्या छे. शम, सत्संग,
संतोष अने विचार. मननुं अनेक प्रकारे
नियमन करवुं ते शम छे: सत्त्विक उपवास,
धन्दियनिश्चल वर्गेरे शमना ज अंतर्गत छे.
सत्संगथी कुवृत्तियो निवृत्त थाय छे अने
सुप्रवृत्तियो सभण अने छे तथा अनेक प्रका-
रना सहविचार मनमां आवे छे, जे आपणु
मनने काण्ड्यमां लाववामां मद्दत करे छे. यीज
मनुष्यों आध्यात्मिक अण आपणुने शुमद्दपे
सहाय करे छे अने ज्ञान तरक्क आपणी रुचि
वधारे छे. संतोषथी आपणी शक्तियोनो अप-
व्यय अटके छे. विचारद्वारा आपणे सारुं
भराण, सत्य-असत्य जाण्याये छीये. माणुस
पोताना विचारद्वारा पोतानी जातने जाये
लावीने परमपद प्राप्त करे छे. पशुयो अने
आणेकामां विचार करवानी योग्यता नहि डोवाथी
तेयो परमपदनी प्राप्ति नथी करी शकता.

ऐक ज शण्डमां आध्यात्मिक उन्नतिनो
उपाय भताववामां आवे तो ऐट्हुं ज कडेवुं
पूरतुं छे ते सांसारिक विषये तरक्क जतां मनने
रोकवाथी आध्यात्मिक शक्ति वधे छे अने सांसा-
रिक विषये तरक्क रोक्टोक वगर तेने जवा
डेवाथी तेनी शक्ति घटे छे.

लगवङ्गीतामां कहुं छे ते—

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥
क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति विभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धि नाशो बुद्धिर्नाशात् प्रणश्यति ॥

अर्थात् विषयेमां रमणु करवुं एज मनुष्यने
माटे धातक छे. ओवा प्रत्येक विषयते भनथी हूर
राख्यो जेइये डे जे प्रसन्नतामां आधक डोय
छे. आपणु तुक्सान उपर लांये. वर्षत विचार
नहि करवा जेइये. तुक्साननी लावना प्रसन्न-
तानो नाश करे छे. ओनाथी आपणी आध्या-
त्मिक शक्तिनो. पथु हृत्त थाय छे. सधारा
प्रकारनी धटनायेनी सारी भाज्जु पर विचार
करवाथी भननी प्रसन्नता जगवाई रहे छे.
संसारनी दरेक धटनाने ये भाज्जु डोय छे. जे
मनुष्यतुं भन धटनानी भराण भाज्जु तरक्क
जय छे ते पोतानी प्रसन्नता पोताना हाथे ज
नष्ट करे छे. ओथी जिल्हुं जेतुं भन सारी भाज्जु
तरक्क ढो छे ते पोतानी प्रसन्नता जपावी राझे
छे. प्रत्येक प्रकारनी हानिथी माणुसने कांधने कांध
लाल थाय छे ज. अने प्रत्येक लालथी कांधने
कांध हानि थाय छे. हानिकारक धटनायेनां
लालने शोधवा नीकण्वुं ए भुद्धिमानों डाम
छे. कोई वर्षत लाल प्रत्यक्ष जेवामां न आवे
तो एम समज्जुं डे लाल तक्कण अप्रत्यक्ष
छे, पथु पाण्डुली प्रत्यक्ष थशे.

प्रसन्नता ऐक संकामक पहार्थ छे. जेवी
रीते रोग संकामक डोय छे तेवी रीते स्वास्थ्य
पथु संकामक डोय छे. रोगी माणुस पोताना
रोगनो प्रचार आसपास रहेनारमां करे छे,
तेवी ज रीते स्वस्थ मनुष्यने जेइने यीज
दोको पथु स्वस्थतानो अनुलव करवा लागे छे.
प्रसन्नतानी पथु ए ज स्थिति छे. मानसिक
विकार जेटवा संकामक डोय छे तेटवा शारीरिक
विकार नथी डोता. ऐक रोगी मनुष्यने जेइने
यीज कोई पथु माणुस तुरत ज रोगी नथी

अनी जरो, पण एक हुःभी मनुष्यने जोहने थीजनु हुदय पण हुःभी लाराई जय छे. एवी ज रीते प्रसन्नचित्त अथवा हुसता दोडेना समाजमां जहने आपणे पण प्रसन्न थहर्ये थीये अने हुसवा लागीये थीये.

आ रीते आपणे जोहने थीये के भाषुस चोते ज प्रसन्न रहीने अनायासे परोपकार करे छे. अंग्रेज विद्वान देखक स्टीवन्सन कहे छे के प्रसन्नचित्त मनुष्यने भण्डुँ ए पांच पाउडनी नेट भेणववा करतां वधारे लालदायक छे. (A happy man or a woman is a better thing to meet than a five pounnd note) भाषुस जे कार्य प्रसन्नचित्ते करे छे तेनाथी थीजने वास्तविक लाल थाय छे. वारंवार चिठ्ठाइने करेला कामथी कशो लाल थतो नथी. कौर्य भाषुस कर्याते भने दान आपे छे तो ए दानथी अनुँ कशुँ कल्याणु नथी थतुँ. प्रसन्नतापूर्वक आपेलुँ दान ज अन्ने पक्षनुँ कल्याणु करे छे. प्रसन्नतापूर्वक करेलुँ कार्य गूठि वगरनुँ रहे छे. एवुँ कौर्य कर्या करती वर्खते भूल थहर जय छे तो ते तुरत ज हेखाई आवे छे. किंतु अप्रसन्नतानी अवस्थामां करेलां कार्यमां एवी अनेक गूठियो रही जय छे जे आपणे नेकाम करती वर्खते नजरे पडती नथी. भाषुसे पोताना माथे एटली ज जवाभदारी लेवी जोहने जे ते प्रसन्नतापूर्वक उडावी शके.

अप्रसन्नता शारीरिक तेमज आध्यात्मिक शक्तियोने झास करे छे. निराशावाही पुरुष हुमेशां आत्मघात करे छे. एवी रीते कोधी भाषुस पण पोतानी सधणी भानसिक शक्तिने नाश करे छे. एवा भाषुसना शरीर पण दोग-अस्त रहे छे. तेच्या थेडा समयमां ज पोतानी छुवन-यात्रा पूरी करे छे. निराशा तथा कोध मनुष्यने माटे धातक छे, ए अन्नेने गाढ

संबंध छे. कोधनुँ लक्ष्य थीजनो विनाश करवानुँ छे अने निराशानुँ लक्ष्य आत्मविनाश करवानुँ छे. कोध अमुक समय बाढ निराशामां ज परिणुमे छे.

दरेक मनुष्ये पोतानी जतने हुमेशां एवा वातावरणुमां राखवी घटे के ज्यां तेना भननी प्रसन्नता नष्ट न थाय. कोधी, निराशावाही, निंदा करनार तथा धर्याणु दोडेथी छूर रहेतुँ जोहने. लागी तथा परोपकारी पुरुषोनो संपर्क वधारवो जोहने. एवा पुरुषोनो सत्संग शक्य न होय तो तेच्योना विचारैतुँ भनन करवामां आपणे समय गाणवो जोहने. सदाचारी पुरुषोना विचारै पुस्तकमांथी भणी आवे छे. आपणे कौर्य भडापुरुषना विचारै कौर्य पुस्तक-द्वारा जाणियो थीये लारे आपणुने तेना सत्संगोनो ज लाल थाय छे. महातमा पुरुषो हुमेशां प्रसन्नचित्त रहे छे अने पोतानी भानसिक अवस्थानो प्रलाव थीज उपर अनायासे ज पाडे छे.

भूख्यो भाषुस प्रसन्नचित्त नथी रही शक्तो. प्रसन्नता क्षुधा-शांतिनी परिचारिका छे. ते पूर्णताना अनुलवनुँ परिणुमे छे. एटला भाटे जे मनुष्य अनेक प्रकारना पदार्थ धृच्छया करे छे ते कहापि प्रसन्नचित्त नथी रही शक्तो. भननी भूख शांत कर्या वगर प्रसन्नता नथी आवती. ए भूख शरीरनी भूख जेवी नथी. शारीरिक भूख ज्ञाननी ग्रासिथी शांत थाय छे, भननी भूख विषयो ग्राम थवाथी वधे छे. ए तो ज्ञानवैराग्यथी ज शांत थाय छे. ज्यां सुधी भन लटकया करे छे त्यां सुधी प्रसन्नतानां दर्शन नथी थतां. ज्यारे भन आत्मामां रमण करवा लागे छे त्यारे तेवी स्वाक्षाविक प्रसन्नता प्रकट थाय छे.



ફં જૈન મુનિઓ ગુજરાતી સાહિત્યના આધસૂષ્ટાઓ છે ફં

લેખક: કુંગરશી ધરમશી સંપદ.

અપભ્રંશ ભાષામાંથી ગુજરાતી ભાષાની ઉત્પત્તિ થઈ છે. અપભ્રંશ ભાષાનું સાહિત્ય હુમણું ને મળે છે તે લગભગ સર્વે જૈન વિક્ષાન મુનિઓની કૃતિ છે. ગુજરાતી ભાષાના મૂળ ઉપાડકો આમ જૈનોના મુનિઓ છે. જૈન મુનિઓએ માગધી, સંસ્કૃત, પ્રાકૃત અને અપભ્રંશ ભાષાના સાહિત્યની જે સેવા કરી છે તે અમૂલ્ય છે. ગુજરાતમાં બૌદ્ધધર્મ ખૂબ ફેલાયો હતો. તેના હંજરો મહોના અવશેષોનો પત્તો મળે છે; પરંતુ બૌદ્ધ સાધુઓ ગુજરાતી ભાષાની કંઈ સેવા કર્યાના ચિન્હો મળ્યા નથી—અપભ્રંશ ભાષામાં પણ એમણે કંઈ લખ્યું હોય એવા સાથનો પ્રાપ્ત થયા નથી. સેંકડો વરસોના એમના શુજરાતના સાહિત્યના અસ્તિત્વ માટેનો કંઈપણ વારસો ગુજરાતીઓને માટે બુદ્ધિસ્ટ સાધુઓ આપી ગયા નથી. ગુજરાતમાં પ્રાદ્યાણુધર્મ બૌદ્ધ ધર્મ પહેલાં પ્રબળ હતો; પરંતુ ગુજરાતી પ્રાદ્યાણુએ પણ ગુજરાતી ભાષાના ઉત્પત્તિ કાળમાં કંઈ જાણુવાને ઝાળો આપ્યોનથી તેમ અપભ્રંશ ભાષાની સેવા પણ કરી નથી. આ ભાષાઓના ઉત્પત્તિકાળમાં નાના કોમળ છોડવાનું સંભાળપૂર્વક પોથણું કરવાનું કામ શુજરાતના બૌદ્ધ ધર્મીઓએ ડે પ્રાદ્યાણુ ધર્મીને ઝાળે જતું નથી. પરંતુ વીતરાગ અને લભ્ય ધાર્મિક આધ્યાત્મિકતાથી પ્રેરાઈને જૈન મુનિઓએ આ મહાન કાર્ય ઉપાડ્યું. એમણે સોલંકીઓની મહત્ત્વાની વધારી, એમણે અપભ્રંશને દીપાવી ગુજરાતી ભાષાના પાયાનું શરૂઆતનું સુંદર કામ પણ જૈન મુનિઓએ ત્યાગવૃત્તિથી અને ઝળની.

આશા વગર કર્યું છે. નરસિંહ મહેતા, ભાલાણું અને પ્રેમાનંદ મહાકવિઓ આ મજબૂત પાયા ઉપર સુંદર દીવાલો બનાવી હતી. ગુજરાતી ભાષાના મૂળરૂપ અપભ્રંશ ભાષાની અક્ષર સેવાની શરૂઆત કરનાર જૈન મુનિઓ હતા. જ્યોતિર્ધર હેમાચાર્યાંજી અપભ્રંશની ઉચ્ચતાના સર્જક શ્રેષ્ઠ ઉત્ત્રતિકાર હતા; પરંતુ એમના પહેલાં પણ અપભ્રંશ ભાષાનું નભણું સાહિત્ય બીજા જૈન મુનિઓનું બનાવેલું હતું. ઈ. સ. દસમાથી અગિયારમાં શતકથી તે ચૈદમાં શતક સુધીના ગુજરાતી ભાષાના ૩૦૦-૪૦૦ વરસોના પ્રથમ ચુગના ચિત્રમાં માત્ર જૈન સાધુઓની જ મૂર્તસ્પેના દર્શન થાય છે.

જ્યોતિર્ધર હેમાચાર્ય સમર્પ વિક્ષાન અને પ્રથમ ડોટીના વ્યાકરણશાસ્ત્રી છે. એમણે સાહિત્યના દરેક અંગો કેળવ્યા છે. આ પ્રાચીન ગુજરાતી વ્યાકરણના આદિ પ્રવર્તક અને પ્રાકૃત ભાષાઓના વિકાસનો સમય ઈ. સ. ૧૦૮૮થી ૧૧૭૨નો હતો. ગુજરાત એ સમયે ઉત્ત્રતિના શિખરે હતું. સમાદો સિદ્ધરાજ જ્યસિંહ અને કુમારપાળનો એ અળહળતો સમય હતો. એના અપભ્રંશ ખંડમાં ને નસુનાઓની આપ્વામાં આવ્યા છે તે સર્વે અગિયારમી અને આરમી સહીના કોડોની સાધારણ બોલવાની ભાષાના છે. એ નસુનાઓની અથવા દિંગંતોની મેની હારમાળા શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યાંજી આપી છે. એ ઉપરથી અપભ્રંશ સાહિત્ય એમના સમયમાં અસ્તિત્વમાં હતું તેને એમણે આપ આપ્યો જણ્યાય છે.

શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યાંજીના દિંગંતોથી જણ્યાય છે

કે ગુજરાતી સાહિત્યનો પ્રારંભકાળ એમના સમયની પહેલાં એટલે દશમા-અગિયારમા શતકથી પણ પહેલાંને છે. પાઠણુના જૈન સાહિત્યલંડારમાં શ્રી હેમાચાર્યના પહેલાંનું ધ્યાન સાહિત્ય મળી આવ્યું છે; પરંતુ હજુ સુધી એ સાહિત્ય ગુજરાતી પ્રજા પાસે સુંયવસ્થાપૂર્વક સુકાયું નથી એ મોટી દિવાની વાત છે. સમર્થ વિક્રાનોએ આ સાહિત્ય સંપૂર્ણ વિવેચન સાથે પ્રસિદ્ધ કરવું જોઈએ. જૈન વિક્રાનો તમે કેટલો સમય સુધુમિ લોગવશો. જો કે ડા. જેંકોઝી અને ગાયકવાડ એરિએન્ટલ સિરિઝમાં કેટલીક સારી કૃતિઓ પ્રસિદ્ધ થઈ છે.

ગુજરાતમાં તે સમયે દિગંબર જૈન સંપ્રદાય સારી પેઠે પ્રવતેલો હશે એમ લાગે છે. કારણું કે અપભ્રંશ ભાષાની પ્રારંભકાળની કૃતિઓ દિગંબર સાધુવરોની બનાવેલી મળે છે. ડા. જેંકોઝીએ જર્મનીમાં ડ. સ. ૧૬૧૮માં દિગંબરી કવિ સ્વયંભૂહેલ અને તેના પુત્ર ન્રિલુલન સ્વયંભૂહેલના રચેલા હરિષંશ પુરાણ અને પઉમ અરિત્ર પ્રસિદ્ધ કર્યા છે. તે સિવાય ધનપાળ કવિ (દસમી સહી) અવિસયત રચ્યું છે. એ પછી મહાઙ્કવિ ધવળે ૧૮૦૦૦ ક્લોકેનો મહાન થથ હરિષંશ પુરાણ દસમી સહીમાં બનાવ્યો છે. તેમાં સમર્થ યુગપુરુષો શ્રી મહાવીરસ્વામી અને શ્રી નેમિનાથ સ્વામીની કૃતાઓ મહાલારતની કૃતા સાથે મિશ્ર કરી વણ્ણાટ કર્યું છે.

શ્રી ચીમનલાલ દલાલે સુરતની સાહિત્ય પરિષદ્ધમાં ને લેખ મૂક્યો હતો તે પ્રમાણે પાઠણુના જૈનલંડારમાં અનેક રત્નો પહ્યા છે. કેટલોક શોધાયાં છે; ખાકી સંશોધન માગી રહ્યા છે. નીચેના અપભ્રંશનાં કાંચો ઉપલેખ કરાયાં છે.

૧ મહેધિરસ્વરૂપિનો (૧૯૬૩માંથી) ૧૧ મી સહીમાં સંયમમંજરી રચી.

૨ પૃથ્વીવિદ્યાલ સુંજ અને મહાવિદ્યાન લોજરાનના કવિ ધનપાળે મહાવીરસાહેબનું નાનું કાંચ રચ્યું.

૩ દિગંબર મહાઙ્કવિ પુણ્યહંતે તિસ્સિંહ મહાપુરિસ ગુણાલંડાર અથવા મહાપુરાણ (૧૩૦૦૦ ક્લોકે), યશોધર અરિત્ર ચાર સંધિમાં અને નાગકુમાર અરિત્ર નવ સંધિમાં રચ્યા. સંધિ એટલે અધ્યાય અપભ્રંશ સાહિત્યમાં કહેવાય છે.

૪ શ્રી અંદ્રમુનિએ રોચક ઉપદેશપૂર્ણ કથાઓના સંથહડ્યપ કથાકોશ પત સંધિઓમાં રચ્યો. આ અંથ સોલકીવંશના આદન્નુપતિ મૂળરાજ હેવના સમયમાં એના મંત્રિ સંજનના પુત્ર કૃષ્ણ માટે રચાયાની એમાં નોંધ છે.

૫ સાગરદચો જાંધૂસ્વામીચરિત સં. ૧૦૭૬-માં રચ્યું જાણ્યાય છે.

૬ એ જ સમય લગભગ પદ્મકીર્તિએ ૧૮ સંધિવાળું પાર્થીપુરાણ રચ્યું હતું.

૭ નથનનિન્દાએ ખાર સંધિમાં સુદર્શન અરિત્ર આરાધના ૧૧૪ સંધિમાં, રચ્યા જાણ્યાય છે.

૮ કનકામરે કરકંડુ અરિત્ર દશ સંધિમાં રચ્યું.

આ સર્વે અપભ્રંશ ભાષામાં રચાયા છે. ટીપણું અને ટીકાની મહદ્વ વગર આજની ગુજરાતી પ્રજા, અપભ્રંશ ભાષા સમજી શકે તેમ નથી. શણદો, ઉચ્ચાર, જોડણીમાં ધ્યાન પરિવર્તનો થયા છે. આ અગિયારમી સહી સુધીનું સર્વે આદિત્ય જૈન સુનિયોનું રચેલું છે. જૈન વિક્રાનો એનું પરિશીલન કરે એવી વિજાપુર છે. એ અમૃદ્ય સાહિત્યમાં ધર્મકથા અને ટોકાંકથાઓ છે. જૈન સાધુઓ વિદ્યાની સેવા પરંપરાથી ચાલુ કરતા આવ્યા છે. પોતાના ધર્મના નિયમો સખતાધીથી પાળતા આ સાધુઓએ ટોકાની તે સમયે બોલાતી ભાષાનો ઉદ્ઘાર કર્યો હતો. હુવે કયારેક ભારમા સૈકાના અને પણીના અપભ્રંશ કાંચો વિષે લખશું.

समयं मा पमाए ।

(गतांक पृष्ठ १४१ थी शरु)

ॐ

‘राज्याभिषेक अने युगदीडे ।’

लेखकः भेदुनलाल दीपचंद शाकसी

आहो ! आ प्रदेश केटवो भनेहुर लागे छे ! ऐक तरक्क हुरियाणी वनराज अने ए सामे गंभीरतापूर्वक लहन करती जणपूर्ण सरिता भणी प्रदेशने कोई अनोपो स्वांग सलवी रह्यां छे. प्रातःकाळना सेनेरी किरण्या हजु प्रभर उष्णुताने धारणु नथी करता एटवे ए पण्य कुहरतना आंगणे पथरायेला आ अवण्यु य आनंदने लूटवामां साचे ज उत्तेजना अपी रह्यां छे. आवो, आवो, आजना मंगलिक हिने, नदी कांडानी पेली सपाट भूमिपर ऐसी, धरती ऐणे विस्तरेली आ शोका नीरभी अने भार्ग डापतां लागेल परिश्रमने बढवो थांडा विश्रान्तिकारा वाणी लध्ये.

टेणीना आगेवाननी कर्णु प्रिय वाणी सांखणी सौ युगलिंडे ए तरक्क वज्या. सरिताना कांडानी रेती पर निरांतरी गोडवाई गया. चोते आ तरक्क क्या हेतुथी याली आव्या छे ते वात धीकर वीसरी गया.

ज्ञानी पुरुषे साचुं ज कही गया छे के प्रभानो कोई दि' पण्य भरोसो न करवो. ए अवण्यु एवो छे के डिनारे आवेलां नावने पण्य भरदरिये केटलीक वार धडेली हे छे. आम तो प्रभाद एटवे ढील, आणस के विलंभ एवा ए शण्हना अर्थ थाय छे, छतां हीर्घदशी तीर्थं कुरहेवे अने पांच भथाणा हेठल वडं ची दीधा छे.

भद्र-विषय-कथाय-निद्रा. अने विकथारूप ऐना मुण्य प्रकार छे अने ए दरेकना अवांतर लेहो पण्य ढीक संभ्यामां थतां होई सभजवा

लेवा छे. ए सर्वतुं यथार्थ स्वरूप भराभर ख्यालमां आवे त्यारे ज प्रभुश्री महाराज देवतुं, प्रथम गणधर भहाराज श्री गैतमस्वामीने उद्देशी कडेवामां आवेल वाक्य—

‘समयं मा पमाए’ अर्थात् ‘क्षणुमात्रने प्रभाद न करीश’ केटलुं किमती छे अनुं साचुं रहुस्य अवधारी शकाय.

१. मह एटवे गर्व के अलिमान-प्राम थयेल असुक शक्ति माटे उच्चु माथुं राखवानी वृति अथवा तो ए अंगे पतराज करवानी टेव. जाति, कुण, अण, इप, तप, रिक्षि, विद्या अने औश्यर्य ए मदना आड लेद छे. ए अंगे धीजा लेहो पण्य पाडी शकाय. सुण्य आशाय तो ए छे के उपरोक्त आड प्रकारनी वस्तुओ उच्चा प्रकारनी आत्माने प्राप्त थै छाय तो सभजवातुं ए छे के पूर्वक्षवमां ए प्राप्त थवामां निमित्त कारण सभी सामयी आत्माओ एकत्र करी हुशे. आजे पण्य आत्मा धारे तो आगामी कण माटे एने शाश्वत भनावी शके अथवा एथी पण्य अधिक भेणववाना थाकठा गोडवी शके. आत्मामां अनंत शक्ति अवरायेदी पडी छे अने आवरणो हूर करी ए शक्तिने काम करती करी हेवानो अज्ञास सतत चाहु राखवानो छे. एटवे चोताने प्राप्त थयेल सामयीना एषत्वनो गर्व नकामो छे अने अन्यने एवा प्रकारनी उषुप ते तंगाश जेवामां आवे तो ए अंगे तिरस्कार करवो के सुख भरडवुं ए पण्य एटलुं ज त्याज्य छे. ए पाछण कर्मराजनी विचित्रता सिवाय धीनुं कंध ज नथी

ओम अवधारवुं अने अलिमान के शुभानथी आधा रहेवुं एज ए सुरक्षित भार्ग छे.

हुरिकेशी नामा दिने वर्षु उत्तमतानुं अलिमान कुर्युं तो थीन लवमां चंडाल जातिमां जन्मवुं पहुयुं. भरीचिकुमारे कुलीनता पाळण नृत्य कुर्युं तो अनी : पधीना लवमां तुच्छ, हलका कुलमां जन्म देवानी ऐश्वी शरु थई अने ते कैठ तीर्थं कर लवमां पण चमकारा अतानी गहि ! मुहीना जेरै केठाना वृक्षने भूमि लेशु करनार खण्वान विश्वभूति राजकुमार गायना धम्काथी धरती पर पडी गया ! इपनो गर्व करनार चक्रवर्ती सनतकुमारनी सुवर्णु सभी निर्भण काया सूक्ष्म जंतुओथी अद्भवी उटी. तपकरणीना अलिमानी साधु एवा भूण्णाणवा अवतर्या के प्रातःकालमां जठराजिन लीनता पडके अने पेटमां कंठ नाञे त्यारे ज शान्त पडे अर्थात् तपनो अंतराय पाऱ्या ! ऋषिनो गर्वधारी हर्षाणुदेशनो स्वामी शक्तें-द्रोनी संपति निहणतां ज ठी गये ! विद्या हेखाडवाना मोहमां पडेला कामविनेता मुनिराज स्थूलजटलु चौदृपूर्वना संपूर्णु शानथी वंचित रह्या ! अने लोभी-और्वैर्यपिपासु एवा सुभूम चक्रीने छ अंड धरतीथी संतोष न थता धातकीअंडनो प्रदेश साधवा नीकड्ये. हुतुं ते न लोगवी शक्ये. अने नवुं न भेणवी शक्ये. नीर अने तीर-उल्लयथी भ्रष्ट जेवी दशा सांपडी. लवण्णसुद्धमां पोताना ज सेवडो-क्षारा पडतो सुक्ये. कर्मविपाक लोगववा गये. सातभी नरके ! अकेक मह आ जातना इणने आपनार होय त्यां क्लेनामां एथा अधिक भराई एडां होय तेनु तो क्लेवुं ज शुं ? अमो जन्या तमो नीन्या. किंवा वीशा-दशा अथवा तो ओसवाण-पोखवाड वच्ये आंतरा रचनारा भानवीओ आ वात विचारे अने अंधारे अथडावानुं भांडी वाणे. गोन्न के कुण

अथवा आठमाहेनो अन्य कोह-गमे ते एक वा अधिक ‘मह’ होवाथी त्याज्य छे. अना पठ-छये जेलवामां पणु महापाप छे. प्रमादना भान्न एक पायानी ज्यां आवी विलक्षणता दृष्टिगोचर थाय छे. अना पनारे पड्या तो सो ए पूरा जेवी वात छे त्यां थीन विषय विलागनी वात आगण पर राखी चालु वार्ता प्रवाहना युगलिको सरिता कांडे शुं करी स्वाहा छे ए प्रति भोट भांडीओ.

तेहो आव्या छे नहीनुं पवित्र जण लेवा. छेवा कुलकर नालि भहारान्जे स्वपुत्र ऋषलने युगलिकोना राज थवानी अनुज्ञा आपी हीधी छे. ए ऋषलकुमारे रिसायेला कृष्णवृक्षा पछी क्षुधा-पिपासा आहिना कष्टोथी पीडायेला युगलिकोने ज्ञवाना मार्गी दाखव्या छे. मानवताना आधपाठ पढाव्या छे. कुहरते प्रगटावेत वारसाने डेवी रीते निर्वाहमां उपयोगी अनावयो ए शीणव्युं छे. एट्टेकुमार प्रति युगलीकोनी असीम प्रीति छे. राजवी तरीके अलिषेक करवा सारु पोताना आजेवानोनी प्रेरणाथी तेहो जण लेवा होत्या आव्या छे. हुद्यमां जण लै पाणा हरवानी प्रणण उत्कंडा जगती पडी छे; छतां आभरे तो हता मानव. कुहरतनो अनेरो सीनो नीरणी रंगमां पड्या. आरामनी भूम लांगता प्रमादवश अन्या ! समयनुं लक्ष्य चूक्या. राज्यालिषेकतुं सुझूर्त वही गयानो ज्याल न रह्यो !

हेवेलोकना हेवो तो आव्या हता, पणु तेमनो स्वामी झुट शचीपति पोते आवी चूक्यो हतो. राज्यालिषेकनी अधी तैयारीओ पूर्णताना जिहने स्पर्शी रही हती. डेवण जण माटे गयेला युगलिकोनी राहु लेवाती हती. क्षणे क्षणु किंमती हती; केमके सुझूर्त वीतवा भांड्यु हतुं. विलंभ असद्य अन्ये. हेवोओ पोते आणेला जणथी कुमार ऋषलने स्नान

विश्वधर्म भूनवा योग्य जैन धर्म

लेखकः—रा. रा. वडील न्यालयांद लक्ष्मीचांद, भी. ए., अक्षयेक. भी. साहस्रा.

मुंबई खातेनी श्री आत्मानंद जैन सलाना
भानइ भंत्री श्रीयुत मोहनलाल हीपचांद
योक्सीना सदनेड आमंत्रणुने मान आपी,
आस हीपोत्सवी अंक प्रकट करवाना तेमना
प्रशस्य उत्साहमां यथाशक्ति वृद्धि करवानी
तक्ने जटी करवातुं योग्य लागतुं नथी.

आस अंक भाटेना लेखना विषयनी पसं-
हगी एवी थयेक छे के तेने पूरेपूरो इन्साइ
आपवा भाटे भारा ज्वेवा सामान्य लेखकनी
मर्यादित शक्तिने पण संकेच अनुखवेवो पडे
तेम छे छातां पण समय-स्थण वर्गेरेनी मर्यादा-
दानो भराभर ख्याल राखी भनता सुधी पसंद
करेक विषयनी पुष्टि भाटे मुख्य मुख्य मुद्दाए
आगण करी, तेनी सविस्तर चर्चा अन्य कौद्धि
प्रसंग भाटे मुद्दतवी राखी तेमज आवा

करांयुं अने सुंहर वस्त्रोथी अने किमती
अदंकारोथी ढेहु विभूषित कर्यो. सिंहासन पर
कुमारे ऐठक पण लीधी. त्यां तो हुरणीयानी
झाणे होडता आवी रहेला युगलिको देखाया
अने जेतजेतामां आवी बडा थया. पोतानुं
कर्तव्य हेवोमे पतावेलुं जेयु. अंतर घवायु
पण एनी ज्वाणदारीनुं भान थतां ज मुखी
आगण आव्यो. नम्र साहे घेव्यो.

आधिको, कुमारना शाणुगारने उतारवानी
ज्वर नथी. कैवल पगाना अंशुठे जगनो असि-
षेक करी अने मुहूर्त अनुसार कार्यसिद्धि
करवामां सावधान अनो!

नलुवा प्रभादे शुभावेदो लाल, विनय
दाखी भेणवी लीधी. ईद्ध महाराज पण आ

महारवना विषयनी विद्वह लोग्य चर्चा भाटे
शास्त्रविशारद, साक्षर अने सिद्धहस्त लेखको
तरह अंगूलीनिर्देश करी आगण वधवातुं
योग्य धारुं हुः.

प्रत्येक विषयमां आगण वधता आधुनिक
वैज्ञानिक ज्ञानामां ज्ञानयुगना उघोत अने
ज्ञानवल प्रकाश पाइता समयमां, जगतभरनी
सर्व प्रजाए वच्चे व्यापारविषयक संसर्ग-
संपर्क अने संकलनाना साधनोनी विपुलतामां
वृद्धि थती ज्य छे. तेवा वधतमां जमीन
दस्ते, दरियामार्ग अने हवामार्ग वधता
ज्ता साधनोनी विपुलतानो हालना लयं कर
विश्वयुद्धनी त्रासज्ञन्य संहारकतामां पूरेपूरो
हुरूपयोग थै रहेक छे. तेवा काणमां, जगत-
लरना भनुण्योना कल्याण अर्थ, विश्वधुत्वनी

करणीथी झुश थया. युगलिकोनुं 'विनीत' एवुं
नाम स्थापन करी राजनी ऋषस भाटे जे
नगरी निर्माणु करी एनु नाम पण 'विनीता'
आयु. युगलिकोना विवेक सह आपणु अत्यारे
पूजा भाटे जे जतनी पठापडी कुरीचे छिचे
ते ज्वर सरण्याववा जेवी छे. तटस्थ युद्धिथी
पछी विचारवा जेवुं छे के एमां धर्मनुं हार्द
डाने समजायुं छे ?

आ चित्र परथी एमां अनावेल मामूली
क्षणोना प्रभादथी डेवुं परिण्याम आयुं ए
विचारतां-' समय भात्र प्रभाद न करीश ' ए
टंकशाणी वचन छे एनी आतरी थया वगर
नहि रहे.

(चालु)

सर्वमान्य भावनाना प्रयार कार्यने योग्य पुष्टि भगती रहे ते खातर, पूर्व अने पश्चिमनी संकृतिनी सरभामणीमां-आध्यात्मिक विषयेनी चर्चा अने प्रतिपादननो सरसाईमां-उत्तमतामां मुख्यत्वे ने भग्नान लेह तरी आपतो ज्ञात्य छे तेने संस्कारित विवेचनथी सुस्पष्ट करवा भाटे, पसंह करवामां आवेल विषयनी चर्चा आधुनिक युगने सर्व रीते अनु-इप अने आवश्यक ज्ञात्य छे.

चार वर्स करतां पाण वधारे मुदतथी प्रवर्ती रहेल भीषण विश्वसंआमनी लयंकर संहारक अने विनाशकारक प्रवृत्तिए अनेकानेक प्रज्ञवत्सल-शांतिप्रिय देशनेताओना हुद्यने हुचमचावी नाज्या छे. हुनियालरनी तमाम प्रज्ञानेन संकुणी रहेल विश्वयुद्धनी भीषण यातनाओ युद्धमां सङ्किय रीते लाग देती तमाम प्रज्ञानेना तेमज पराधीन देशोनी शुलामीहशा लोगवती प्रज्ञानेन पाण अनेक रीते संतापी रहेल छे. हुनियालरना बधा अडेना देशोना नक्षा अवनवा पलटा पामी रहेल छे. आने सर्वशे स्वतंत्रता लोगवता देशनी प्रज्ञने आवतीकाले पराधीन अने परतंत्र दशामां एकदम आनी ज्वुं पडे छे. तहन शुलामी दशा लोगवती प्रज्ञानी सविष्यनी स्थिति कृपनातित थर्ड पडी छे. विश्वयुद्धना लयंकर परिणामेनी असर वधाताओछा प्रभाष्यमां सर्वन्त्र त्रास उपज्ञवी रहेल छे. आवा कपरा वर्षतमां-हुधमकाणमां सौ कोइ विश्वशांति भाटे अंभी रहेल छे. आवी विश्वशांति कैवा उपायेथी प्राप्त थर्ड शाके? प्राप्त थया पडी पाण ते कै रीते हीर्घाकाण पर्यंत ज्ञवाई रहे! ते सौ कोइ विचारक व्यक्ति भाटे प्रक्ष थर्ड पडेल छे. सर्वमान्य विश्वशांति स्थापाता पडेलां अनेकानेक हुर्घट प्रक्षो प्रत्येक देशना अग्रण्य देशनेताओनी संगठित

विचारणा अने हुद्यना विशुद्ध भावपूर्वकनी मंत्रणा भागी रहेल छे अने ते भाटेनी प्राथ-मिक भूमिका अगडता देशोना मुख्य मुख्य संचालक नेताओये पोतपोताना हुद्यनी भावनाओमां आवश्यक पवटो लावीने ज तैयार करवानी जड़र छे.

आवी विश्वशांति प्रत्येक देशना आगेवान देशनेताओना अनेक क्षेत्रेन लगती विधविध प्रवृत्तिथी ज शक्य ज्ञात्य छे अने तेवी प्रवृत्तिएमां विश्वधर्मनी स्थापना अने तेना प्रयार भाटेना तमाम शक्य प्रयासो मुख्य स्थान रोके छे.

विश्वशांतिनी स्थापना करी, तेने हीर्घाकाण पर्यंत नभावी राखे तेवी कृद्ध शक्ति धरावतो विश्वधर्म परम भाननीय गण्यावो जोहुये.

आवा विश्वधर्मनी शक्यता-संबन्धितां अने विचारणा आ देख्ने विषय छे. परम भान्य, भद्रातुभाव, उदारहितना अने विशाल दृष्टिना तत्ववेत्ताओ. अने तत्वदृष्ट्याओनी हीर्घ-दृष्टिपूर्वकनी निष्पक्ष अने सर्वदेशीय भीमांसानी क्षेत्रीमांथी सांगोपांग पसार थर्ड शाके तेवा कोइ सर्वमान्य विश्वधर्मनी शोधयोग छालना संयोगामां अत्यंत आवश्यक ज्ञात्य छे. कहेवानी जड़र नथी के तेवा कोइ विश्वधर्मनुं प्राहुर्भूत तत्व लोकसंघार्थे जगत्भरना सर्व मतुष्योना कल्याणुनी अलिवृद्धि भाटे, योग्येम निभिते सारथाही दृष्टिए धर्म उपकारक अने कल्याणुकारी थर्ड पडे तेम छे.

धर्मा प्राचीन समयथी प्रवर्तता जुदा जुदा अनेक धर्म संप्रदायोना मैलिक सिद्धांतो तेना संस्थापको अने आवप्ररुपकोना धर्म सिद्धांतोमां, समयना प्रवाहे, प्रत्येक युगणनां संक्षुध वातावरणना प्रलावे, सञ्चाण-ध अनिच्छनीय परिवर्तने. अने धरमूणना इरहारो नीपज्ञवा छे एटलुं ज नहि परंतु प्रत्येक धर्मना अनुयायीओना वर्तनमां तो,

મારવાડમાં કદ્વપતરુ. બીકાનેરમાં યુગવીર આચાર્યદેવનો પ્રવેશ તથા તે અંગે ચહેરો અપૂર્વ વર્ણાડા અને ઉલ્લેખી ભાનવ મેદની.

આનીસ વર્ષ જેટલા દીર્ઘ સમય પછી પુજયપાઇ
પંજાઅકેસરી અજાનતિમિરતરણી કલિકાલકદ્વપતરુ
યુગવીર આચાર્યદેવ :—



શ્રી વિજયવદ્ધલસ્સરી દ્વારા મહારાજ.

રાન્યસત્તા અને દ્રવ્યના અમર્યાહિત લોલવશાત, તીવ્ર કૃપાય યોગની પ્રણાળાને લીધે અનેક પ્રકારના વર્ગ-વિશ્રણો ઉપસ્થિત થતાં પ્રખર અને પ્રલાવશાળી (?) નેતાઓનું ચેનેકેન પ્રકારેણું કેવળ અંધ અનુકરણ વધ્યે જતાં, એટલો અધ્યો અનિષ્ટ શતમુખી વિનિપાત થઈ ગયેલ છે કે હાલની દુનિયા વિનાશના આરે જ લાલી હોય તેમ જણ્ણાય છે. પરમ માન્ય ધર્મિક દિષ્ટિએ સૂક્ષ્મ ઝુદ્ધિથી વિચાર કરતાં સર્વત્ર અશાંતિ અને અંધકારમય વાતાવરણ પૂર્ણેશમાં જમી રહેલું જણ્ણાય છે. ધર્મબુદ્ધિ, કલ્યાણભાવના, વિશ્વઅધૃતવૃત્તિ ક્યાંય અહશ્ય થઈ ગઈ હોય તેમ જણ્ણાય છે. સત્તા, લોલી વૃત્તિ, જનમ-સંહારક પ્રવૃત્તિને પુરવેગ મળી રહ્યો છે. કોઈને ધરીલર પાછા વળીને જોવાની શાંતિથી વિચાર કરવાની પણ નથી મળતી. કુરસાહ કે નથી જગતી જ્ઞાસાવૃત્તિ કે આટલી અધી લીધાય

આચાર્ય શ્રી ૧૦૦૮ શ્રીમહ્ર વિજયવદ્ધલસ્સરી-
દ્વારા ૮૦ સાઠ તું બીકાનેરમાં પદાર્થથી ચયું
છે. તે પ્રસંગની ઉજવણી માટે બીકાનેરના શ્રી સંધે
ને ઉત્સાહ દર્શાવ્યો. છે તે અવર્ણાતીય છે. જ્યારે
શ્રી આચાર્યદેવ અહીંથી સવાસો માધ્યલ દૂર રહ્યા
ત્યાર્થી જ બીકાનેરના અક્તાજનો આચાર્યદેવની
સાથે પાદવિહારી રહી સેવાપરાયણ થઈ ગયા હતા.
બીકાનેરની ઉપત્િકામાં આચાર્યદેવનો પ્રવેશ થયો
કે તરત જ શહેરના ધનકુદ્દેરાએ આવી વંન કરી
પોતપોતાના બંગલાઓમાં, ડાડીઓમાં કે શાંતિ-
નિકિતનોમાં પદ્ધારવાની વિનંતી કરી હતી. તે તે
સ્થળોમાં શ્રી આચાર્યદેવના ચરણાવિંદ પદ્મા પછી
તે આધ્યાત્મિક ભાવ્ય મંડ્પો અંધાવી તેમાં વ્યાખ્યાનો
કરાવી તથા સ્વધર્માવાતસથ્યો કરી ગુરુભક્તિનો
અપૂર્વ લાલ લીધો હોય.

સંહારક શક્તિ આપણુને કઈ હિસા તરફ હોરી
રહેલ છે. આવા હૃષમ કાળમાં વિશ્વધર્મની
પ્રાહુર્ભૂત થતી શક્યતા જનસસુદ્ધાયમાં નવું જ
અણ-પ્રાણ અને ચેતના શક્તિ જાયત કરી શકે
તેમ છે; તેમજ ઉજન્યળ જાયિય માટે અનેક-
વિધ મહત્વાકંક્ષાઓની જનમદાત્રી થઈ પડે છે.

ઉપર જણાયા મુજબના પરિવર્તનો-પદ
દ્વારા અને ફેરફારોમાંથી કોઈ પણ ધર્મ કે
તેના અનુયાયીઓ જાચી શક્યા હોય તેમ
જણું નથી. સમયણ સર્વ કોઈના ઉપર
વધતા-ઓછા પ્રમાણુમાં પોતાની અસર કરી
રહેલ છે, તેમાંથી જગતને સર્વનાશ તરફ હોરી
રહેલ છે, તેમાંથી જગતને-જગતભરની પ્રભા-
ઓને વિશ્વશાંતિ માટેની કોઈ અપૂર્વ યોજના
જ બાચાવી શકે તેમ છે અને તેવી વિશ્વ શાંતિ
વધતાઓછા. અંગે સર્વમાય વિશ્વધર્મના
પ્રયાસથી જ સાધ્ય થઈ શકે તેમ છે. (ચાલુ)

चैत्र वही १ शुक्रवारना मंगलमय शुभ प्रभाते पूज्यपाद आचार्यदेवता गुरुकुमा शिष्यरत्न पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमह विजयलिलितसूरिण्णु तथा तपस्वी श्री विक्रमविजयल, मुनिराज श्री हिंभतविजयल, मुनिराज श्रीविशारदविजयल श्री इपविजयल, श्री जनकविजयल पशु वरकाण्यातीर्थी लांडे विहार करी पाली, जेधपुर, कापड़ाल, नागोर थध पूज्य आचार्यदेवती सेवामां हाजर थध गया हुता.

प्रवेश महोत्सव भाटे श्री संघे अनेक नवा हरवाण तैयार कर्या हुता. शमेर शाशुगायुं हुतुः पञ्जभमांथी तमाम आम नगरोना भाविक सज्जनो योतोतानी भजनमंडलीया लध आनी पहोच्या हुता. राजपूताना संभ्याप्यं लाईभिहेनो सहस्र सानं दर्शन दृष्टिगोचर थता हुता. पूज्यपाद आचार्यदेव शेठ लौकुहनल शहियाना भक्तनां, शेठ सेहनराजलु कर्णुवटनी सेहनकोठीमां तथा उवेरी प्रेमराजल भजनमांचीना भंगलामां एक एक ऐ ऐ हिवस रिथरता करी चैत्र वहि २ दिवारे नगरमां प्रवेश कर्या हुनो. प्रवेशमां डंका, निशान, डातल, हाथी, सूरकारी ऐ३, शीख बेन्डाहि तेमज अनेक आमनगरोनी भजनमंडणीयोनी शेला जेवामां आवती हुती. पंजाणी भाविकोनी अपूर्व भक्त जेझ प्रेक्षको दंग रही जता हुता. वरदोडा लगभग एक भाईबना विस्तारमां झेलायो हुतो. तथा वरदोडा एडवर्ड रोड, भेगोरीअल रोड, कोट दरवाजे, लालुलना कटडे, चोपडाना कटडे, पायथंदस्त्रिण्णु भंडिरे अने जेक्सहरनी भारीमां थध लगभग सानना ७ वागता डायरोनी गवाडमां जितर्यो हुतो. त्यां एक अप्य भंडप जिभो करवामां आव्यो हुतो. जेमां पूज्यपाद आचार्यदेव आहि मुनिमंडणी पधरामणी थध हुती.

सर्व प्रथम श्री आत्मानं जैन गुरुकुलना भूतपूर्व विद्यार्थी रघुवीरकुमारे गुरुस्तुति करी हुती. तत्पश्चात् भीकानेर श्री संघ तरक्षी पूज्यपाद आचार्यदेवती सेवामां ऐ अक्षिनंहन-पत्रो एक

संस्कृतमां तथा भीने हिन्दीमां अर्पण करवामां आप्या हुता. तथा पूज्य मुनिराज श्री कवीन्द्रसागरल म० ना समयोचित व्याख्यान अने अनेक भक्तजनोना भक्तिगर्वित भजनो थया आद पूज्यपाद आचार्यदेव भग्नभंगलकारी भंगलाचरण संभगायुं हुतुः तथा धर्मदेशना इरमावी हुती. त्यारभाद पूज्यपाद आचार्यदेव सपरिवार श्री जिनभंडिरोना दर्शन करी डायरोनी गवाडना उपाश्रये पधार्या हुता.

रात्रिना ६ थी ११ सुधी लाला गानहासण्णी अध्यक्षतामां भंडपमां एक सभा थध हुती जेमां श्री आत्मानं जैन गुरुकुलना विद्यार्थीयोना भजनो तथा व्याख्यानो अने अन्य पंजाणी भाईयोना तथा भीकानेरना सज्जनोना व्याख्यानो थया हुता.

प्रवेशना शुभ दिवसे श्री संघ तरक्षी ३०० त्रिजुसो पञ्चेन्द्रिय प्राणीयोने अस्त्रयदान अपाववामां आयुं हुतुः.

चैत्र वहि ३ ना दिवसे हजरोनी माननमेहनी वच्ये संकांतिमहोत्सव जेजववामां आव्यो हुतो. पूज्यपाद आचार्यदेव सकल विधननिवारक भग्नभंगलकारी स्तोत्रो संभगायुं हुता अने व्याख्यान आप्युं हुतुः तथा पूज्य आचार्य श्रीमह विजयलिलितसूरिण्णु म० तुः पशु व्याख्यान थयुं हुतुः अने भान्यवर श्रीयुत लोकमान्य गुलाबचंडल हुतो जेम. ए. नी अध्यक्षतामां निभविभित प्रस्ताव पास करवामां आव्यो हुतो.

‘यह प्रतीत हुआ है कि साधुओं व यात्रिओं के धर्मशालाओं में ठहरने वगैरह गतिविधि पर माननीय पालीताणा गवर्नर्मेंट कानून बनानी चाहती है। पंजाब व राजस्थान के चतुर्विध संघ की समिलित सभा पूज्यपाद आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरी-शरजी म० तथा आचार्य श्रीमद् विजय

.....વર્તમાન સમાચાર.....

શ્રી મુખ્ય આત્માનંદ જૈન સભાની વાર્ષિક મીટિંગ
 ૧. સા. શેડ કાન્ટિલાલબાધ ધર્મરલાલના પ્રમુખપણું
 નીચે જૈન કોન્ફરન્સ એફિસમાં ચૈત્ર શુદ્ધ ૨ ના
 રેજ મળી હતી. નેમાં ગયા વર્ષનો હિસાબ અને
 રિપોર્ટ સેક્રેટરીઓએ રજૂ કરતાં સર્વાનુમતે પસાર
 કરવામાં આવ્યો હતો. અને નવા વર્ષની વ્ય. કમિ-
 ટીની નિભેનોક નીચે પ્રમાણે કરી હતી.

૧ રા. સા. કાન્ટિલાલ ધર્મરલાલ ને. પી. પ્રમુખ.
 ૨ શેડ શાંતિલાલ મગનલાલ ૭૫ પ્રમુખ.

લલિત સૂરિજી મ૦, આચાર્ય શ્રીમહુ વિજય
 વિદ્યાસૂરિજી મ૦ ઔર પૂર્ય મુનિરાજ શ્રી
 કવીન્દ્રસાગરજી મ૦ આદિ મહાત્માઓ કી
 ઉપસ્�િતિ મેં સર્વ સમ્મતિ સે યહ પ્રસ્તાવ પાસ
 કરતી હૈ કે ધર્મજાળાઓ કે પ્રબંધ કે વિષય
 મેં કોઈ કાનૂન બનાયા જાના સમ્પૂર્ણ જૈન
 સમાજ કે અધિકારો મેં હસ્તક્ષેપ હૈ ક્યોંકિ
 યહ પ્રશ્ન સમ્પૂર્ણ ભારતવર્ષ કે જૈન સમાજ સે
 સંબંધ રહેતા હૈ। અતઃ ઇસકા પ્રબંધ શ્રી
 આણન્દજી કલ્યાણજી કી પેઢી વ શ્રી જૈન
 શ્વેતામ્બર કોન્ફ્રેસ કરો। જિસસે સમ્પૂર્ણ જૈન
 સમાજ કે અધિકાર સમુચ્ચિતરૂપ સે સુરક્ષિત
 રહેં ઔર રાજ્ય કી હસ્તક્ષેપ ન હો સકે।

બપોરના મંડપમાં શ્રી પાર્શ્વનાથ પંચ કુદ્યાણુક
 પૂજન મોટા સમારોહપૂર્વક અણુવવામાં આવી હતી.

પૂજ્યપાદ આચાર્યદૈવ પોતાના શિષ્યરત્ન પ્રભર-

૩ શેડ સફરચંદ મોતીલાલ

અનુનાની

શાહ મોહનલાલ દીપચંદ તથા વાડીલાલ લેઠાલાલ
 શાહ મંત્રીઓ, મોહનલાલ દોલતરામ, મોતીચંદ
 ગિરધરલાલ કાપિયા, મનસુખલાલ લાલન, જેમંગલાલ
 લલ્લુભાધ, શ્રી કુલચંદભાઈ શામળ, વરધીલાલ વમળશી,
 હીરાભાધ રામચંદ મલાયારી ઓડિટર છેવટે શેડ
 સાહેખ કુલચંદભાધ શામળ તરફથી અદ્ય આહાર
 લઘ મીટિંગ વિસંગન કરવામાં આવી હતી.

શિક્ષાપ્રયારક પૂજ્ય આચાર્ય શ્રીમહુ વિજય-
 લલિતસૂરિજી મ૦, પૂર્ય આચાર્ય શ્રીમહુ વિદ્યાસૂરિજી
 મ૦, પંન્યાસળ શ્રી સમુદ્રવિજયજી મ૦ મુનિરાજ
 શ્રી વિચારવિજયજી, શ્રી શિવવિજયજી, શ્રી વિશુદ્ધ-
 વિજયજી, તપસીજી શ્રી વિક્રમવિજયજી, શ્રી હિમત-
 વિજયજી, શ્રી વિશ્વારદ્વિજયજી મ૦, શ્રી ઇપવિજયજી,
 અને શ્રી જનકવિજયજી મ૦ આદિ હાણુ ૧૨ સહિત
 અને બિરાજમાન છે. પૂજ્યપાદ આચાર્યદૈવના
 ધ્યાનાનો દરરેજી ‘મોક્ષના સાધનો’ અને તેની
 આરાધના’ ના વિષય ઉપર થાય છે. શહેરની જૈન
 નૈતેતર જનતા હજારોની સંખ્યામાં લાભ લઈ રહી છે.

ખીકાનેરના શ્રી સંધે ખજાગમથી આવનાર
 સજજનોની સારી સેવા અનુવી હતી.

પૂજ્યપાદ પરમેપકારી આચાર્યદૈવના સહૃપદેશથી
 ચૈત્રી મેળી મેટા સમારોહપૂર્વક થવાની છે,

પત્રોત્તર કરનાર નીચે મુજબ સરનામે કરશે.

૩૦ જૈન ઉપાશ્રી ડેઅરેની ગવાડ,

૩૦ ખીકાનેર (રાજપૂતાના)